अंत में, मैं पुनः महामहिम राष्ट्रपति महोदया के अभिभाषण का हृदय से समर्थन करता हूं ।

धन्यवाद ।

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): अध्यक्ष जी, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद देने के लिए खड़ा हुआ हूँ। संसद के इस नए भवन में जब आदरणीया राष्ट्रपति जी हम सबको संबोधित करने के लिए आई थीं, और जिस गौरव और सम्मान के साथ सेंगोल पूरे प्रोसेशन का नेतृत्व कर रहा था और हम सब उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, नए सदन में यह नई परंपरा भारत के आजादी के उस पवित्र पल का प्रतिबिंब, जब साक्षी बनता है, तो लोकतंत्र की गरिमा कई गुणा ऊपर चली जाती है।

यह 75वां गणतंत्र दिवस, इसके बाद संसद का नया भवन, सेंगोल की अगुवाई, यह सारा दृश्य अपने आप में बहुत ही प्रभावी था। मैं जब वहां से पूरे कार्यक्रम की भागीदारी कर रहा था , यहां से तो हमें उतनी भव्यता नज़र नहीं आती है , लेकिन जब वहां से मैंने देख तो वाकई इस नए सदन में इस गरिमामयी उपस्थिति में – राष्ट्रपति जी , उप-राष्ट्रपति जी और आप , हम सबके मन को प्रभावित करने वाला वह दृश्य हमेशा-हमेशा याद रहेगा।

करीब 60 से ज्यादा जिन माननीय सदस्यों ने राष्ट्रपति जी के आभार प्रस्ताव पर अपने-अपने विचार रखे हैं, मैं विनम्रता के साथ उन सभी माननीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ। मैं विशेष रूप से विपक्ष ने जो संकल्प लिया है, उसकी सराहना करता हूँ। उनके भाषण की एक-एक बात से मेरा और देश का विश्वास पक्का हो गया है कि इन्होंने लंबे अरसे तक वहां रहने का संकल्प ले लिया है। आप कई दशक तक, जैसे यहां बैठे थे, वैसे ही कई दशक तक वहां बैठने का आपका संकल्प है अब जनता-जनार्दन तो ईश्वर का रूप होती है। आप लोग जिस प्रकार से इन दिनों मेहनत कर रहे हैं , मैं पक्का मानता हूं कि ईश्वर रूपी जनता -जनार्दन आपको जरूर आशीर्वाद देगी। आप जिस ऊंचाई पर हैं, उससे भी अधिक ऊंचाई पर जरूर पहुंचेंगे और अगले चुनाव में दर्शक -दीर्घा में दिखेंगे।... (व्यवधान)

अधीर रंजन जी , इस बार क्या आपने अपना कॉन्ट्रैक्ट उनको दे दिया है ? ... (व्यवधान) आपने इन्हीं चीजों को पचाया है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं देख रहा हूं कि आप में से बहुत लोग चुनाव लड़ने का हौसला भी खो चुके हैं। मैंने सुना है कि बहुत लोगों ने पिछली बार भी सीट बदलीं , इस बार भी कुछ सीट बदलने के फिराक में हैं। मैंने सुना है कि बहुत लोग अब लोक सभा के बजाय राज्य सभा में जाना चाहते हैं। स्थितियों का आकलन करके वे अपना-अपना रास्ता ढूंढ रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी , राष्ट्रपति जी का अभिभाषण एक प्रकार से तथ्यों के आधार पर , हकीकतों के आधार पर एक बहुत बड़ा दस्तावेज है , जो देश के सामने राष्ट्रपति जी ने प्रस्तुत किया है। अगर आप इस पूरे दस्तावेज को देखेंगे तो उन हकीकतों को समेटने का प्रयास किया है , जिससे देश किस स्पीड से प्रगति कर रहा है , किस स्केल के साथ गतिविधियों का विस्तार हो रहा है , उसका लेखा-जोखा आदरणीय राष्ट्रपति जी ने प्रस्तुत किया है।

आदरणीय राष्ट्रपति जी ने भारत के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुए चार मजबूत स्तंभों पर हम सबका ध्यान केंद्रित किया है। उनका सही -सही आकलन है कि देश के चार स्तंभ जितने ज्यादा मजबूत होंगे, जितने ज्यादा विकसित होंगे, जितने ज्यादा समृद्ध होंगे, हमारा देश उतना ही समृद्ध होगा, उतना ही तेजी से समृद्ध होगा। उन्होंने इन चार स्तंभों का उल्लेख करते हुए देश की नारी शक्ति, देश की युवा शक्ति , देश के हमारे गरीब भाई -बहन और देश के हमारे किसान , मछुआरे, पशुपालक की चर्चा की है। इनके सशक्तीकरण के माध्यम से राष्ट्र के विकसित भारत के लक्ष्यक को प्राप्त करने की जो राह है, उसके स्पष्ट दिशा-निर्देश आदरणीय राष्ट्रपति जी ने कहा हैं।

प्रो. सौगत राय (दमदम) : इसमें माइनोरिटीज़ नहीं है।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : हो सकता है आपके यहां फिशरमैन माइनोरिटी के न हों , हो सकता है आपके यहां पशुपालक माइनोरिटी के न हों , हो सकता है किसान आपके यहां माइनोरिटी के न हों , हो सकता है महिलाएं आपके यहां माइनोरिटी में न हों , हो सकता है कि आपके यहां युवा माइनोरिटी में न हों , क्या हो गया है दादा? क्या इस देश के युवा वर्ग की बात होती है , समाज के सब वर्ग नहीं होते हैं ? देश की नारी की बात होती है, तो क्या देश की सभी नारी नहीं होती हैं ? कब तक टुकड़ों में सोचते रहोगे, कब तक समाज को बांटते रहोगे? सब छीना करो, छीना करो, बहुत तोड़ा देश को।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, अच्छा होता कि जाते-जाते तो कम से कम इस चर्चा के दरम्यान कुछ सकारात्मक बातें होतीं, कुछ सकारात्मक सुझाव आते। लेकिन, हर बार की तरह आप सब साथियों ने देश को बहुत निराश किया। आपकी सोच की मर्यादा देश समझता है। उसको बार-बार दर्द होता है कि यह दशा है इनकी , इनके सोचने की मर्यादा इतनी है। आदरणीय अध्यक्ष जी , नेता तो बदल गए , लेकिन टेपरिकार्डर वही बज रहा है। वही बातें , कोई नई बात आती नहीं , पुरानी ढपली, पुराना राग, वही चलता रहता है आपका। चुनाव का वर्ष था , थोड़ी मेहनत करते, कुछ नया निकाल करके लाते , जनता को जरा संदेश दे पाते, उसमें भी फेल हो गए आप। चलिए, यह भी मैं सिखाता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी , आज विपक्ष की जो हालत है , इसकी सबसे दोषी कांग्रेस पार्टी है। कांग्रेस को एक अच्छा विपक्ष बनने का बहुत बड़ा अवसर मिला। दस साल कम नहीं होते हैं। लेकिन दस सालों में उस दायित्व को निभाने में भी वे पूरी तरह विफल रहे। जब खुद विफल हो गए तो विपक्ष में और भी होनहार लोग हैं , उनको भी उभरने नहीं दिया , क्योंकि फिर मामला और गड़बड़ हो जाए , इसलिए हर बार यही करते रहे कि और भी विपक्ष के जो तेजस्वी लोग हैं , उनको दबा दिया जाए। हाउस में कई यंग हमारे माननीय सांसदगण हैं , उनमें उत्साह भी है , उमंग भी है। लेकिन , अगर वे बोलें, उनकी छवि उभर जाए, तो शायद किसी की छवि बहुत दब जाए, उस चिंता में इस यंग जेनरेशन को मौका न मिले , हाउस को चलने नहीं दिया गया। एक प्रकार से इतना बड़ा नुकसान कर दिया है , खुद का भी, विपक्ष का भी, संसद का भी और देश का भी। मैं हमेशा चाहता हूं कि देश को एक स्वस्थ , अच्छे विपक्ष की बहुत जरूरत है।

श्री अधीर रंजन चौधरी: प्रधान मंत्री जी, प्रेसीडेंशियल एड्रेस पर बात करिए न।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : देश ने जितना परिवारवाद का खामियाजा उठाया है और उसका खामियाजा खुद कांग्रेस ने भी उठाया है। अधीर बाबू की हालत हम देख रहे हैं , वरना यह समय था संसद में रहने का , लेकिन परिवारवाद की सेवा तो करनी ही पड़ती है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, अब हालत देखिए। हमारे खरगे जी इस सदन से उस सदन शिफ्ट हो गए। ... (व्यवधान) गुलाम नबी जी तो पार्टी से ही शिफ्ट कर गए। ये सब परिवारवाद की भेंट चढ़ गए।

एक ही प्रोडक्ट को बार -बार लांच करने के चक्कर में कांग्रेस की दुकान पर ताला लगने की नौबत आ गई है। दुकान हम नहीं कह रहे हैं , आप लोग ही कहते हैं कि दुकान खोलिए , सब जगह बोलते हैं। दुकान पर ताला लगने की बात आई है। ... (व्यवधान) यहां दादा अपनी आदत छोड़ नहीं पाते हैं। परिवारवाद पर बैठे -बैठे कमेंट कर रहे हैं। मैं जरा समझा देता हूं। अध्यक्ष महोदय मैं थोड़ा समय ले रहा हूं कि हम किस परिवारवाद की चर्चा करते हैं। अगर किसी परिवार में अपने बलबूते पर जन समर्थन से एक से अधिक अनेक लोग अगर राजनीतिक क्षेत्र में प्रगति करते हैं तो उसको हमने कभी परिवारवाद नहीं कहा है। हम उस परिवारवाद की चर्चा करते हैं जो पार्टी परिवार चलाता है , जो पार्टी परिवार के लोगों को प्राथमिकता देता है। पार्टी के सारे निर्णय परिवार के लोग ही करते हैं , यह परिवारवाद है। न राजनाथ सिंह जी की कोई पोलिटिकल पार्टी है, न अमित शाह की कोई पॉलीटिकल पार्टी है। जहां एक परिवार की पार्टी लिखी जाती है वह लोकतंत्र में उचित नहीं है। एक परिवार के दस लोग राजनीति में आएं, इसमें कुछ भी बुरा नहीं है। हम चाहते हैं कि नौजवान लोग राजनीति में आएं , हम भी चाहते हैं कि इसकी चर्चा कीजिए। हमारा और आपका विषय नहीं है।

देश के लोकतंत्र के लिए परिवारवादी राजनीति , पारिवारिक पार्टियों की राजनीति , यह हम सभी के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। यदि किसी परिवार के दो लोग राजनीति में प्रगति करते हैं तो मैं उसका स्वागत करूंग। दस लोग प्रगति करें, मैं स्वागत करूंगा, देश में नई पीढ़ी और अच्छे लोग राजनीति में आएं, यह स्वागतयोग्य है। सवाल यह है कि परिवार ही पार्टियां चलाती हैं , यह पक्का है कि अगर यह अध्यक्ष नहीं होगा तो उसका बेटा होगा। ये नहीं तो उसका बेटा होगा , यह लोकतंत्र का खतरा है। दादा आपको थैंक्यू, यह अच्छा हुआ, मैं इस विषय पर कभी बोलता नहीं था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक ही प्रोडक्ट को बार -बार लांच करने का प्रयास हो रहा है। कांग्रेस एक परिवार में उलझ गई। देश के करोड़ों परिवार की अकांक्षाएं और उपलब्धियां देख नहीं पा रहे हैं , देख नहीं सकते हैं , अपने परिवार के बाहर देखने की तैयारी नहीं है। कांग्रेस में एक कैंसिल कल्चर डेवलप हुआ है, कुछ भी है कैंसिल, कुछ भी है कैंसिल। एक ऐसे कैंसिल कल्चर में फंस गई है , अगर हम कहते हैं मेक इन इंडिया तो कांग्रेस कहती है कैंसिल , हम कहते हैं आत्मनिर्भर भारत , कांग्रेस

कहती है कैंसिल, हम कहते हैं वोकल फॉर लोकल , कांग्रेस कहती है कैंसिल , हम कहते हैं वंदे भारत ट्रेन, कांग्रेस कहती है कैंसिल, हम कहते हैं संसद की नयी इमारत, कांग्रेस कहती है कैंसिल। यह मोदी की उपलब्धियां नहीं हैं, यह देश की उपलब्धियां हैं। इतनी नफरत कब तक पाले रखोगे , इसके कारण देश की सफलताएं, देश के एचीवमेंट्स, उसको भी आप कैंसिल करके बैठ गए हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी , राष्ट्रपति जी ने विकसित भारत के रोडमैप पर चर्चा की , आर्थिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने अर्थव्यवस्था के मूलभूत आधार पर बारीकी से चर्चा की है। भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था को आज पूरी दुनिया सराह रही है, पूरी दुनिया इससे प्रभावित है। जब विश्व संकट से गुजर रहा तब तो उनको और ज्यादा अच्छा लगता है। जी -20 सम्मिट के अंदर सारे देशों ने देखा है कि पूरा विश्व भारत के लिए क्या सोचता है और क्या कहता है। इन 10 साल के कार्यकाल के अनुभव के आधार पर आज की मजबूत अर्थव्यवस्था को देखते हुए जिस तेज गति से भारत विकास कर रहा है , इसकी बारीकियों को जानते हुए मैं विश्वास से कहता हूं और इसीलिए मैंने कहा है कि हमारे तीसरे टर्म में भारत दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक ताकत बनेगा और यह मोदी की गारंटी है। … (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर): बेरोजगारी की गारंटी है, पेट्रोल और डीजल की गारंटी है। … (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: बेरोजगारी की गारंटी है। … (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, क्या इनको पहले बोलने का मौका नहीं दिया था ? आपने तो सबको मौका दिया है। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब हम दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनकर उभरेंगे तो विपक्ष में बैठे कुछ साथी कैसा कुतर्क देते हैं। … (व्यवधान) इसमें क्या है? यह तो अपने आप हो जाएगा। क्या कमाल है आप लोगों का ? मोदी का क्या है? यह तो अपने आप हो जाएगा। सरकार की भूमिका क्या होती है? मैं ज़रा इस सदन के माध्यम से देश को विशेषकर देश के युवा मन को बताना चाहता हूं , देश की युवा शक्ति को बताना चाहता हूं कि यह होता कैसे है और सरकार की भूमिका क्या होती है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 10 साल पहले 2014 में फरवरी महीने में इंटरिम बजट आया था, उस समय कौन लोग बैठे थे , आपको तो मालूम ही है और देश को भी मालूम है। दस साल पहले जो इंटरिम बजट आया था , उसे पेश करते समय उस समय के वित्त मंत्री ने जो कहा , मैं उसे क्वोट कर रहा हूं। इसका एक-एक शब्द बड़ा मूल्यवान है। जब आप लोग कहते हैं कि यह तो अपने आप तीसरे नंबर पर चला ही जाएगा , ऐसा जो कहते हैं उनको ज़रा समझना चाहिए। उन्होंने कहा था – ' I now wish to look forward and outline a vision for the future.' विज़न फॉर द फ्यूचर, पूरे ब्रह्मांड के सबसे बड़े अर्थशास्त्री बोल रहे थे। ' I now wish to look forward and outline a vision for the future.' आगे कहते हैं - 'I wonder how many have noted the fact that India's economy, in terms of the size of its GDP, is the 11th largest in the world.'
यानी वर्ष 2014 में 11 नंबर पर पहुंचने पर क्या गौरवगान होता था। आज पांच पर पहुंच गए और आप यह कह रहे हैं?

श्री गौरव गोगोई : इसके आगे क्या बोला वह भी बोल दीजिए। इसी स्पीच में लिखा है कि आने वाले समय में थर्ड लार्जेस्ट होंगे। … (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आगे पढ़ रहा हूं। गोगोई जी , थैंक्यू, आपने अच्छा कहा। ध्यान से सुनिए। साथियों , ध्यान से सुनिए। उन्होंने कहा था कि "… is the 11th largest in the world." बड़े गौरव का वाक्य था। " There are great things in store." फिर वह आगे कहते हैं कि "There is a well-argued view that in the next three decades India's nominal GDP will take the country to the third rank after the US and China."

आदरणीय अध्यक्ष जी, उस समय के बड़े अर्थशास्त्री कह रहे थे कि तीसरे नंबर पर 30 साल में हम पहुंच जाएंगे। 30 साल, और फिर कहा था कि यह मेरा विजन है, … (व्यवधान)

गृह मंत्री तथा सहकारिता मंत्री (श्री अमित शाह): मनमोहन सिंह जी , उस समय नहीं थे। आप बैठ जाइए। … (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : बहुत लोग हैं, जो ख्यालों में रहते हैं , वे ब्रह्मांड के सबसे बड़े अर्थशास्त्री हैं। ये लोग वर्ष 2014 में कह रहे हैं और विजन क्या देखते हैं – वर्ष 2044, यानी वर्ष 2044 तक तीसरी अर्थव्यवस्था की ये बात करते हैं। यह इनकी सोच , इनकी मर्यादा है। ये सपना भी देखने का सामर्थ्य खो चुके थे, संकल्प तो दूर की बात थी। 30 साल का इंतजार करने के लिए मेरे देश की युवा पीढ़ी को ये कहकर गए थे, लेकिन हम आज आपके सामने विश्वास से खड़े हैं, इस पवित्र सदन में खड़े हैं और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि 30 साल हम नहीं लगने देंगे। यह मोदी की गारंटी है। मेरे तीसरे कार्यकाल में देश दुनिया की तीसरी आर्थिक शक्ति बन जाएगा। … (व्यवधान) ये कैसे लक्ष्य रखते थे? इनकी सोच कहां तक जाती थी? दया आती है। आप लोग ग्यारह नंबर पर बड़ा गर्व कर रहे थे, जबकि हमने पांचवे नंबर पर पहुंचा दिया। अगर ग्यारह पर पहुंचने से आपको खुशी होती थी, तो पांच नंबर पर पहुंचने पर भी खुशी होनी चाहिए कि देश पांचवें नंबर पर पहुंच गया। आपको खुशी होनी चाहिए। आप किस बीमारी में फंसे पड़े हैं?

आदरणीय अध्यक्ष जी, भाजपा सरकार की काम करने की स्पीड , हमारे लक्ष्य कितने बड़े होते हैं, हमारा हौसला कितना बड़ा होता है, वह आज पूरी दुनिया देख रही है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारे उत्तर प्रदेश में एक कहावत है। एक कहावत कही जाती है - 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस।' मुझे लगता है कि यह कहावत पूरी तरह कांग्रेस को परिभाषित करती है। कांग्रेस की सुस्त रफ्तार का कोई मुकाबला नहीं है। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनाए और शहरी गरीबों के लिए 80 लाख पक्के मकान बने।… (व्यवधान) अगर कांग्रेस की रफ्तार से ये घर बने होते तो क्या हुआ होता? … (व्यवधान) मैं इसका हिसाब लगाता हूं। अगर कांग्रेस की जो रफ्तार थी , उस प्रकार से चला होता तो इतना काम करने में 100 साल लगते।… (व्यवधान) पांच पीढ़ियां गुजर जातीं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 10 वर्ष में 40 हजार किलोमीटर रेलवे ट्रैक का इलेक्ट्रिफिकेशन हुआ। अगर कांग्रेस की रफ्तार से देश चलता तो इस काम को करने में 80 साल लग जाते। एक प्रकार से चार पीढ़ियां गुजर जातीं।

आदरणीय अध्यक्ष जी , हमने 17 करोड़ अधिक गैस कनेक्शन दिए। यह मैं 10 साल का हिसाब दे रहा हूं। अगर कांग्रेस की चाल से चलते तो ये कनेक्शन देने में और 60 साल लग जाते। तीन पीढ़ियां धुएं में खाना पकाते-पकाते गुजर जातीं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी सरकार ने सैनिटेशन कवरेज को 40 परसेंट से 100 परसेंट तक पहुंचाई है। अगर कांग्रेस की रफ्तार होती तो यह काम होते -होते 60-70 साल और लगते और कम से कम तीन पीढ़ियां गुजर जातीं, लेकिन गारंटी नहीं होता कि यह काम होता या नहीं होता।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस की जो मानसिकता है, जिसका देश को बहुत नुकसान हुआ है। … (व्यवधान) कांग्रेस ने देश के सामर्थ्य पर कभी भी विश्वास नहीं किया। वे अपने आप को शासक मानते रहे और जनता-जनार्दन को हमेशा कमतर आंकते गए, छोटा आंकते गए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश के नागरिकों के लिए कैसा सोचते थे? मैं जानता हूं कि नाम बोलते ही उनको जरा चुभन होगी, लेकिन 15 अगस्त को लाल किले से प्रधान मंत्री नेहरू ने जो कहा था, वह मैं जरा पढ़ता हूं। लाल किले से भारत के प्रथम प्रधान मंत्री नेहरू जी ने जो कहा था , वह पढ़ रहा हूं। उन्होंने कहा था – 'हिन्दुस्तान में काफी मेहनत करने की आदत आम तौर से नहीं है। हम इतना काम नहीं करते हैं, जितना कि यूरोप वाले, जापान वाले, चीन वाले, रूस वाले या अमेरिका वाले करते हैं।' यह नेहरू जी लाल किले से बोल रहे हैं। … (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई : महोदय, प्रधानमंत्री जी ने राज्य सभा में एक महिला सांसद के लिए क्या कहा है।…(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : यह न समझिए कि वे कौमें कोई जादू से खुशहाल हो गईं , वे मेहनत से हुई हैं और अक्ल से हुई हैं। ये उनको सर्टिफिकेट दे रहे हैं और भारत के लोगों को नीचा दिखा रहे हैं।…(व्यवधान) यानी नेहरू जी की भारतीयों के प्रति सोच थी कि भारतीय आलसी हैं , नेहरू जी की भारतीयों के प्रति सोच थी कि भारतीय कम अक्ल के लोग होते हैं।…(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : यह आपको शोभा नहीं देता है।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय अध्यक्ष जी , इंदिरा जी की भी सोच उससे ज्यादा अलग नहीं थी।... (व्यवधान) इंदिरा जी ने 15 अगस्त को लाल किले से कहा था कि "दुर्भाग्यवश हमारी आदत ये है कि जब कोई शुभ काम पूरा होने को होता है , तो हम आत्मतुष्टि की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं और जब कोई कठिनाई आ जाती है , तो हम नाउम्मीद हो जाते हैं। कभी -कभी तो ऐसा लगने लगता है कि पूरे राष्ट्र ने ही पराजय भावना को अपना लिया है" ।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उनको 'आयरन लेडी' कहा था।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आज कांग्रेस के लोगों को देखकर लगता है कि इंदिरा जी भले ही देश के लोगों का आकलन सही न कर पाईं , लेकिन उन्होंने कांग्रेस का एकदम सटीक आकलन किया था। कांग्रेस से इस शाही परिवार के लोग मेरे देश के लोगों को ऐसा ही समझते थे। उनके विषय में ऐसा ही सोचते थे।...(व्यवधान) आज भी वही सोच देखने को मिलती है।...(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: वे भी प्रधानमंत्री थे। दुनिया में कभी आप भी नहीं रहेंगे।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : माननीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस का विश्वास हमेशा सिर्फ एक ही परिवार पर रहा है। एक परिवार के आगे वे न कुछ सोच सकते हैं , न ही कुछ देख सकते हैं। कुछ दिन पहले 'भानुमति का कुनबा जोड़ा', लेकिन फिर 'एकला चलो रे' करने लग गए। कांग्रेस के लोगों ने मोटर मैकेनिक का नया - नया काम सीखा है। इसीलिए एलाइनमेंट क्या होता है , उसका ज्ञान तो हो गया होगा , लेकिन मैं देख रहा हूं कि अलायंस का ही एलाइनमेंट बिगड़ गया है।... (व्यवधान) अगर इनको अपने इस कुनबे में एक-दूसरे पर विश्वास नहीं है, तो ये लोग देश पर विश्वास कैसे करेंगे?...(व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई: महोदय, प्रधानमंत्री जी मणिपुर कब जाएंगे?...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: आदरणीय अध्यक्ष जी, हमें देश के इस सामर्थ्य पर भरोसा है। हमें लोगों की शक्ति पर भरोसा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब देश की जनता ने हमें पहली बार सेवा करने का अवसर दिया , तो हमारे पहले कार्यकाल में यूपीए के समय के जो गड्ढे थे , उन गड्ढों को भरने में हमारा काफी समय और शक्ति लगी। हम पहले कार्यकाल में वे गड्ढे भरते रहे।

हमने दूसरे कार्यकाल में नए भारत की नींव रखी और तीसरे कार्यकाल में हम विकसित भारत के निर्माण को नई गति देंगे। हमने पहले कार्यकाल में 'स्वच्छ भारत' , 'उज्ज्वला', 'आयुष्मान भारत', 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ', उसी प्रकार से 'सुगम्य भारत', 'डिजिटल इंडिया' ऐसे कितने ही जनहित के कामों को अभियान का स्वरूप देकर आगे बढ़ाया। ... (व्यवधान) टैक्स व्यवस्था आसान हो, इसके लिए जीएसटी जैसे निर्णय लिए और हमारे इन कामों को देखकर जनता ने भरपूर समर्थन दिया, जनता ने बहुत आशीर्वाद दिए, पहले से भी ज्यादा आशीर्वाद दिए और हमारा दूसरा कार्यकाल प्रारम्भ हुआ। दूसरा कार्यकाल संकल्पों और वचनों की पूर्ति का कार्यकाल रहा। जिन उपलब्धियों का देश लंबे समय से इंतजार कर रहा था, वे सारे काम हमने दूसरे कार्यकाल में पूरे होते देखे। ... (व्यवधान) हम सबने अनुच्छेद 370 खत्म होते हुए देखा। इन्हीं माननीय सांसदों की आंखों के सामने और उनके वोट की ताकत से अनुच्छेद 370 गया। 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' दूसरे कार्यकाल में कानून बना।

आदरणीय अध्यक्ष जी, अंतरिक्ष से लेकर ओलम्पिक तक , सशस्त्र बलों से संसद तक नारी शक्ति के सामर्थ्य की गूंज उठ गई। ... (व्यवधान) नारी शक्ति के सशक्तिकरण को आज देश ने देखा है। उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक लोगों ने दशकों से अटकी, भटकी, लटकी योजनाओं को समयबद्ध तरीके से पूरा होते हुए देखा। अंग्रेजी शासन के पुराने दण्ड प्र धान कानूनों से हम ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: प्लीज, प्लीज।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, सदन के नेता बोल रहे हैं। प्लीज, आप समझाइए।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सदन के नेता बोल रहे हैं। मैंने आप सबको पर्याप्त समय, पर्याप्त अवसर दिया था। यह तरीका गलत है। हमें मर्यादा बनाकर रखनी पड़ेगी।

... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज, बैठे-बैठे कोई टिप्पणी नहीं करेगा।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज, नो। यह गलत तरीका है।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : क्या यह आपका तरीका है?

… (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय अध्यक्ष जी, अंग्रेजी शासन के पुराने कानून जो दंड प्रधान थे , उन दंड प्रधान कानूनों से हटकर के हमने न्याय संहिता तक प्रगति की है। हमारी सरकार ने सैंकड़ों ऐसे कानूनों को समाप्त किया, जो अप्रसांगिक हो गए थे। सरकार ने 40,000 से ज्यादा कम्प्लायेंसेस खत्म कर दिए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, भारत ने अमृत भारत और नमो भारत ट्रेनों से भविष्य की उन्नति के सपने देखे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश के गांव-गांव ने, देश के कोटि-कोटि जनों ने विकसित भारत की संकल्प यात्रा देखी है और सेच्युरेशन के पीछे कितनी मेहनत की जाती है, उसके हक की चीज उसको मिले, उसके दरवाजे दस्तक देकर के देने का प्रयास देश पहली बार देख रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, भगवान राम न सिर्फ अपने घर लौटे, बल्कि एक ऐसे मंदिर का निर्माण हुआ, जो भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा को नयी ऊर्जा देता रहेगा। … (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, अब हमारी सरकार का तीसरा कार्यकाल भी बहुत दूर नहीं है। ज्यादा से ज्यादा सौ-सवा सौ दिन बाकी हैं और 'अब की बार'-

अनेक माननीय सदस्य : '400 पार।'

श्री नरेन्द्र मोदी : पूरा देश कह रहा है, 'अब की बार' –

अनेक माननीय सदस्य : '400 पार।'

श्री नरेन्द्र मोदी : खड़गे जी भी कह रहे हैं।

अनेक माननीय सदस्य: '400 पार।'

श्री नरेन्द्र मोदी : अध्यक्ष जी, मैं आम तौर पर आंकड़ों-वांकड़ों के चक्कर में नहीं पड़ता हूं। लेकिन मैं देश का मिजाज देख रहा हूं कि एनडीए को तो 400 पार करवा के ही रहेगा। लेकिन भारतीय जनता पार्टी को 370 सीट अवश्य देगा। ... (व्यवधान) बीजेपी को 370 सीट और एनडीए को 400 पार। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: क्या सभा की कार्यवाही इस विषय की समाप्ति तक बढ़ा दी जाए?

अनेक माननीय सदस्य: जी हां।

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारा तीसरा कार्यकाल बहुत बड़े फैसलों का होगा। मैंने लाल किले से कहा था और राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के समय भी मैंने उसको दोहराया था।

18.00 hrs

मैंने कहा था कि मैं देश को अगले 1000 वर्षों तक समृद्ध और सिद्धि के शिखर पर देखना चाहता हूँ। तीसरा कार्यकाल अगले 1000 वर्षों के लिए एक मजबूत नींव रखने का कार्यकाल होगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं भारतवासियों के लिए, उनके भविष्य के लिए बहुत ही विश्वास से भरा हुआ हूँ। मेरा देश के 140 करोड़ नागरिकों के सामर्थ्य पर अपार भरोसा है। मेरा बहुत विश्वास है। 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। यह सामर्थ्य दिखाता है।... (व्यवधान) मैंने हमेशा कहा है कि गरीब को अगर साधन मिले, गरीब को अगर संसाधन मिले, गरीब को अगर स्वाभिमान मिले तो हमारा गरीब गरीबी को परास्त करने का सामर्थ्य रखता है और हमने वह रास्ता चुना और मेरे गरीब भाइयों ने गरीबी को परास्त करके दिखाया है।

इसी सोच के साथ हमने गरीब को साधन दिए, संसाधन दिए, सम्मान दिया, स्वाभिमान दिया। आज 50 करोड़ गरीबों के पास बैंक खाता है। वे पहले कभी बैंक से गुजर नहीं पाते थे। आज 4 करोड़ गरीबों के पास पक्का घर है। घर उसके स्वाभिमान को एक नया सामर्थ्य देता है। 11 करोड़ से अधिक परिवारों को पीने का शुद्ध जल नल से मिल रहा है। 55 करोड़ से अधिक गरीबों को 'आयुष्मान भारत' कार्ड मिला है। घर में कोई भी बीमारी आ जाए और उस बीमारी के कारण वह फिर से गरीबी

की तरफ न चला जाए , उसको भरोसा है कि कितनी भी बीमारी क्यों न आ जाए , उसके लिए मोदी बैठा है। 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज की सुविधा दी गई है।

आदरणीय अध्यक्ष जी , मोदी ने उनको पूछा , जिनको पहले कोई पूछता तक नहीं था।... (व्यवधान) देश में पहली बार रेहड़ी-पटरी वाले साथियों के बारे में सोचा गया। 'पीएम स्वनिधि योजना' से आज वे ब्याज के चक्कर से बाहर निकले और बैंक से पैसे लेकर अपने कारोबार को बढ़ा रहे हैं। देश में पहली बार जिनका सामर्थ्य हाथ का हुनर है, जो राष्ट्र का निर्माण भी करते हैं, ऐसे मेरे विश्वकर्मा साथियों के बारे में सोचा गया। उनको आधुनिक टूल्स , आधुनिक ट्रेनिंग, पैसों की मदद तथा उनके लिए वैश्विक मार्केट खुल जाए , यह मेरे विश्वकर्मा भाइयों के लिए हमने किया है। देश में पहली बार पी.वी.टी.जी., यानी जनजातियों में भी अति पिछड़े हमारे जो भाई -बहन हैं, चूँकि उनकी संख्या बहुत कम है। उन पर वोट के हिसाब से किसी की नजर नहीं जाती है , लेकिन हम वोट से परे हैं। हम दिलों से जुड़े हुए हैं। इसलिए पी .वी.टी.जी. जातियों के लिए 'पीएम जनमन योजना' बनाकर उनके कल्याण का मिशन मोड में काम उठाया है। इतना ही नहीं , सरहद के जो गांव थे, जिनको आखिरी गांव करके छोड़ दिया गया था, हमने उन आखिरी गांवों को पहला गांव बनाकर विकास की पूरी दिशा बदल दी है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं बार-बार मिलेट्स की वकालत करता हूं। दुनिया के अंदर जाकर मिलेट्स की चर्चा करता हूं। जी -20 देशों के लोगों के सामने गर्व के साथ मिलेट्स परोसता हूं , इसके पीछे मेरे दिल में तीन करोड़ से ज्यादा मेरे छोटे किसान हैं , जो मिलेट्स की खेती करते हैं। उनके कल्याण से हम जुड़े हुए हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं वोकल फॉर लोकल की बात करता हूं , जब मैं मेक इन इंडिया की बात करता हूं, तब मैं करोड़ों गृह उद्योग, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, उससे जुड़े हुए मेरे लाखों परिवारों के साथ, उनके कल्याण के लिए सोचता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, खादी, कांग्रेस पार्टी ने उसको भुला दिया, सरकारों ने भुला दिया, आज मैं खादी को ताकत देने में सफलतापूर्वक आगे बढ़ा हूं, क्योंकि खादी के साथ, हैंडलूम के साथ करोड़ों बुनकरों की जिंदगी लगी हुई है, मैं उनके कल्याण को देखता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी , हमारी सरकार हर कोने में गरीबी को निकालने के लिए , गरीब को समृद्ध बनाने के लिए अनेक विविध प्रयासों को कर रही है। जिनके लिए वोट बैंक ही था , उनके लिए उनका कल्याण संभव नहीं था। हमारे लिए उनका कल्याण राष्ट्र का कल्याण है और इसलिए हम उसी रास्ते पर चल पड़े।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस पार्टी ने , यूपीए सरकार ने ओबीसी समुदाय के साथ भी कोई न्याय नहीं किया है, अन्याय किया है।...(व्यवधान) इन लोगों ने ओबीसी नेताओं का अपमान करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। कुछ दिनों पहले जब कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न दिया , हमने वह सम्मान दिया, लेकिन याद करिए , उस कर्पूरी ठाकुर जी , अति पिछड़े समाज से ओबीसी समाज के उस महापुरुष के साथ क्या व्यवहार हुआ था? किस प्रकार से उनके साथ जुल्म किया? वर्ष 1970 में, वे बिहार के मुख्यमंत्री बने। उनको पद से हटाने के लिए कैसे -कैसे खेल खेले गए थे? उनकी सरकार अस्थिर करने के लिए क्या कुछ नहीं किया गया था?

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस को अति पिछड़ा व्यक्ति बर्दाश्त नहीं हुआ था। वर्ष 1987 में जब कांग्रेस के पास, पूरे देश में उनका झंडा फहरता था , सत्ता ही सत्ता थी, तब उन्होंने कर्पूरी ठाकुर को प्रतिपक्ष के नेता के रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया और कारण क्या दिया कि वे संविधान का सम्मान नहीं कर सकते।... (व्यवधान) जिस कर्पूरी ठाकुर ने पूरा जीवन लोकतंत्र के सिद्धांतों के लिए, संविधान की मर्यादाओं के लिए खपा दिया , उनका अपमान करने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया।

आदरणीय अध्यक्ष जी , कांग्रेस के हमारे साथी आज कल इस पर बहुत चिंता जताते हैं कि सरकार में ओबीसी के कितने लोग हैं , कितने पद पर कहां हैं , उसका हिसाब-किताब करते रहते हैं , लेकिन मैं हैरान हूं कि उनको इतना, सबसे बड़ा ओबीसी नजर नहीं आता है।...(व्यवधान) कहां आंखें बंद करके बैठ जाते हैं?... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये दुनिया भर की चीजें करते हैं।... (व्यवधान) मैं कहना चाहता हूं।... (व्यवधान) यूपीए के समय एक एक्स्ट्रा कॉंस्टिट्यूशनल बॉडी बनाई गई थी, जिसके सामने सरकार की

कुछ नहीं चलती थी। नेशनल एडवाइजरी काउंसिल – जरा कोई निकाल कर देखें कि उसमें क्या कोई ओबीसी था? जरा निकाल कर देखिये। इतनी बड़ी पावरफुल बॉडी बनाई थी और उसे अपॉइंट कर रहे थे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछले 10 वर्षों में नारी शक्ति के सशक्तीकरण को लेकर अनेक विध कदम उठाए गए हैं।... (व्यवधान) नारी के नेतृत्व में समाज के सशक्तीकरण पर काम किया गया है। अब देश की बेटी के लिए हिंदुस्तान में कोई ऐसा सेक्टर नहीं है , जहां देश की बेटियों के लिए दरवाजे बंद हो। आज हमारे देश की बेटियां फाइटर जेट भी उड़ा रही हैं आर हमारे देश की सीमाओं को भी सुरक्षित रख रही हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय , ग्रामीण अर्थव्यवस्था हमारी है। विमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से 10 करोड़ बहनें जुड़ी हैं और आर्थिक गतिविधि करती हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को वे नई ताकत दे रही हैं और मुझे आज खुशी है कि इन प्रयासों का परिणाम है कि करीब-करीब एक करोड़ लखपति दीदी आज देश में बनी हैं। जब मेरी उनसे बातें होती हैं , उनका जो आत्मविश्वास देखता हूं, मेरा पक्का विश्वास है कि हम जिस तरह आगे बढ़ रहे हैं, आने वाले हमारे कार्यकाल में 3 करोड़ लखपति दीदी हमारे देश के अंदर देखेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं कि गांव की अर्थव्यवस्था में कितना बड़ा बदलाव हो जाएगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारे देश में बेटियों के संबंध में जो पहले सोच थी , समाज के घर में घुस गई थी, दिमाग में भी घुस गई थी, आज वह सोच कितनी तेजी से बदल रही है। थोड़ा सा बारीकी से देखेंगे तो हमें पता चलेगा कि कितना बड़ा सुखद बदलाव आ रहा है। पहले अगर बेटी का जन्म होता था तो चर्चा होती थी कि अरे, खर्चा कैसे उठाएंगे? उसको कैसे पढ़ाएंगे? उसकी आगे की जिंदगी एक प्रकार से कोई बोझ है , ऐसी चर्चाएं हुआ करती थीं। आज बेटी पैदा होती है तो पूछा जाता है कि अरे, सुकन्या समृद्धि एकाउंट खुला कि नहीं खुला? यह बदलाव आया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पहले सवाल होता था कि प्रेग्नेंट होने पर नौकरी नहीं कर पाओगी। पहले यह बात होती थी कि प्रेग्नेंट होने पर नौकरी नहीं कर पाओगी। आज कहा जाता है कि 26 हफ्ते की पेड लीव और बाद में भी अगर छुट्टी चाहिए तो मिलेगी। यह बदलाव होता है। पहले समाज में

सवाल होते थे कि महिला होकर नौकरी क्यों करना चाहती हो ? क्या पति की सैलरी कम पड़ रही है ? ऐसे सवाल होते थे। आज लोग पूछ रहे हैं कि मैडम आपका जो स्टार्ट -अप है न, बहुत प्रगति कर रहा है। क्या मुझे नौकरी मिलेगी? यह बदलाव आया है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक समय था, जब सवाल पूछा जाता था कि बेटी की उम्र बढ़ रही है , शादी कब करोगी ? बेटी की उम्र बढ़ रही है , शादी कब करोगी ? आज पूछा जाता है कि बेटी पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों कामों को संतुलित कितना बढ़िया करती हो, कैसे करती हो?

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक समय था, घर में कहा जाता था कि घर के मालिक घर पर है कि नहीं है? ऐसा पूछा जाता था। घर के मुखिया को बुलाइये। ऐसा कहते थे। आज किसी के घर जाते हैं , तो घर महिला के नाम पर, बिजली का बिल उसके नाम पर आता है, पानी, गैस सब उसके नाम पर है, तो परिवार के मुखिया की जगह आज मेरी माताएं एवं बहनों के नाम हैं। यह बदलाव है।

अमृतकाल में विकसित भारत का हमारा जो संकल्प है , उसमें यह बदलाव एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में उभरने वाला है और मैं उस शक्ति के दर्शन कर पा रहा हूँ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय , किसानों के लिए आँसू बहाने की आदत मैंने बहुत देखी है। किसानों के साथ कैसा-कैसा विश्वासघात किया गया है, उसे इस देश ने देखा है। कांग्रेस के समय कृषि के लिए कुल वार्षिक बजट 25 हजार करोड़ रुपए होता था। हमारी सरकार का बजट है सवा लाख करोड़ रुपए का। कांग्रेस ने अपने 10 साल के कार्यकाल में किसानों से 7 लाख करोड़ रुपए के धान और गेहूँ खरीदे थे। हमने 10 वर्ष में करीब 18 लाख करोड़ रुपए के धान और गेहूँ की खरीद की है। कांग्रेस सरकार ने नाम मात्र की दलहन और तिलहन की खरीदी कभी की हो , तो की हो, लेकिन हमने सवा लाख करोड़ रुपए से भी अधिक के दलहन और तिलहन खरीदे हैं।

हमारे कांग्रेस के साथियों ने पीएम किसान सम्मान निधि का मजाक उड़ाया। जब मैंने मेरी पहली टर्म में यह योजना शुरू की थी , तो मुझे याद है, झूठे नरेटिव की जो फैशन चल पड़ी है , गांवों में जाकर कहा जाता था, देखिए मोदी के पैसे मत लेना , ये एक बार चुनाव जीत गया , तो सारे पैसे ब्याज

समेत तुमसे वापस मांगेगा। ऐसा झूठ फैलाया गया था। किसानों को इतना मूर्ख बनाने की कोशिश की गई थी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पीएम किसान सम्मान निधि में हमने 2 लाख 80 हजार करोड़ रुपए भेजे हैं। पीएम फसल बीमा योजना के तहत 30 हजार रुपए का प्रिमियम और उसके सामने डेढ़ लाख करोड़ रुपए मेरे किसान भाई-बहनों के लिए दिए गए हैं।

कांग्रेस ने शासन काल में , उनके काम में तो मछुआरे और पशुपालकों का नामो -निशान नहीं था। पहली बार, इस देश में मछुआरों के लिए अलग मंत्रालय बना और पशुपालन के लिए अलग मंत्रालय बना। पहली बार पशुपालकों और मछुआरों को किसान क्रेडिट कार्ड दिया गया ताकि कम ब्याज पर उनको बैंक से पैसे मिल सकें और वे अपना कारोबार बढ़ा सकें। किसानों और मछुआरों की भी चिंता है, सिर्फ जानवरों की नहीं होती है। ये जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। आर्थिक चक्र को चलाने में इन पशुओं की भी बहुत बड़ी भूमिका होती है।

हमने फुट एंड माउथ डिजीज जैसे रोगों से पशुओं को बचाने के लिए 50 करोड़ से ज्यादा टीके लगवाए हैं। पहले यह कभी सोचा नहीं गया था।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज भारत में युवाओं के लिए जितने भी नये अवसर बने हैं , ये पहले कभी नहीं बने। आज पूरी वोकैबलरी बदल गयी है। शब्द हैं , जो पहले कभी सुनने को नहीं मिलते थे। ऐसे शब्द बोलचाल की सहज दुनिया में आ चुके हैं।

आज चारों तरफ स्टार्ट-अप्स की गूंज है। आज नि-कॉम्स चर्चा में हैं। आज डिजिटल क्रिएटर्स का एक बहुत बड़ा वर्ग हमारे सामने है। आज गिग इकोनॉमी की चर्चा हो रही है। युवाओं की जुबान पर नये भारत की नयी वोकैबलरी है। यह नये आर्थिक साम्राज्य का नया परिवेश है, नई पहचान है।
ये सेक्टर युवाओं के लिए रोजगार के लाखों नए अवसर बना रहे हैं। वर्ष 2014 से पहले डिजिटल इकोनॉमी की साइज न के बराबर थी , बहुत ज्यादा उसकी चर्चा भी नहीं थी। आज भारत दुनिया की अग्रणी डिजिटल इकोनॉमी है। लाखों युवा इससे जुड़े हैं और आने वाले समय में यह डिजिटल इंडिया

मूवमेंट जो है , वह देश के नौजवानों के लिए अनेक -अनेक अवसर, अनेक-अनेक रोजगार, अनेक-अनेक प्रोफेशंस के लिए अवसर लेकर आने वाला है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज भारत, मेड इन इंडिया फोन दुनिया में पहुँच रहे हैं। दुनिया में हम नंबर दो बन गए हैं और एक तरफ सस्ता मोबाइल प्राप्त हुआ है और दूसरी तरफ सस्ता डेटा। इन दोनों ने देश में एक बहुत बड़ा रिवॉल्यूशन लाया है और दुनिया में हम जिस कीमत पर इसे प्राप्त करवा रहे हैं, हम सबसे कम कीमत पर करवा रहे हैं। वह इसका एक कारण बना है। आज मेड इन इंडिया अभियान, रिकॉर्ड मैन्युफैक्चरिंग, रिकॉर्ड एक्सपोर्ट देश देख रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये सारे काम हमारे नौजवानों के लिए सबसे ज्यादा रोजगार लाने वाले काम हैं, सबसे ज्यादा रोजगार के अवसर पैदा करने वाले काम हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, 10 वर्ष में टूरिज्म सेक्टर में अभूतपूर्व उछाल आया है। हमारे देश में यह ग्रोथ हुई है और टूरिज्म सेक्टर ऐसा है , जिसमें कम से कम पूँजी निवेश में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देने का अवसर है। सामान्य से सामान्य व्यक्ति को भी यह रोजगार देने वाला अवसर है। स्वरोजगार की सबसे ज्यादा संभावनाओं वाला टूरिज्म क्षेत्र है। 10 वर्ष में दोगुने एयरपोर्ट्स बने हैं। सिर्फ एयरपोर्ट्स बने हैं , ऐसा नहीं है। भारत दुनिया का तीसरा बड़ा डोमेस्टिक एविएशन सेक्टर बन चुका है। हम सबको खुशी होनी चाहिए। भारत की जो एयरलाइंस कंपनियाँ हैं , उन्होंने एक हजार नए एयरक्राफ्ट्स के ऑर्डर दिए हैं। देश में एक हजार नए एयरक्राफ्ट्स होंगे।... (व्यवधान) जब इतने सारे हवाई जहाज ऑपरेट होंगे , सारे एयरपोर्ट कितने दमखम पर होंगे , कितने पायलेट्स की जरूरत पड़ेगी, कितने हमें क्रू मेंबर चाहिए, कितने इंजीनियर चाहिए, कितने ग्राउंड सर्विस के लिए लोग चाहिए यानी रोजगारी के नये-नये क्षेत्र खुलते जा रहे हैं। एविएशन सेक्टर भारत के लिए एक बहुत बड़ा नया अवसर बनकर आया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी कोशिश रही है कि इकोनॉमी को हम फॉर्मलाइज करने की दिशा में मजबूती से कदम उठाएं। युवाओं को नौकरी भी मिले , सोशल सिक्योरिटी भी मिले। इन दोनों को लेकर और जिन बातों के आधार पर हम निर्णय करते हैं और देश में भी माना जाता है , वह ईपीएफओ

का डाटा होता है। ईपीएफओ में जो रजिस्ट्रेशन होता है , 10 साल में करीब 18 करोड़ नए सब्सक्राइबर आए हैं। वह तो सीधा पैसों से जुड़ा खेल होता है , उसमें फर्जी नाम नहीं होते हैं। मुद्रा लोन पाने वालों में 8 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने जीवन में पहली बार अपना कारोबार शुरू किया है , बिजनेस शुरू किया है। जब वह मुद्रा लोन लेता है तो खुद तो रोजगारी पाता ही है , एक या दो और लोगों को भी रोजगारी देता है, क्योंकि उसका काम ऐसा होता है। हमने लाखों स्ट्रीट वेंडर्स को सपोर्ट किया है। 10 करोड़ महिलाएं एसएचजी से जुड़ीं, जैसा मैंने कहा है कि एक करोड़ लखपति दीदी , यह अपने आप में बहुत बड़ी चीज है।

मैंने जैसे कहा कि हमने तीन करोड़ का टार्गेट रखा है। कुछ आंकड़े हैं, जो केवल अर्थशास्त्री ही नहीं समझ सकते , बल्कि सामान्य आदमी भी समझ सकते हैं। वर्ष 2014 के पहले दस वर्षों में इनफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में करीब-करीब 12 लाख करोड़ रुपये का बजट था। दस साल में 12 लाख करोड़ रुपये का बजट था। बीते दस वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण के अंदर बजट 44 लाख करोड़ रुपये का है। रोजगार कैसे बढ़ते हैं, यह इससे समझ आता है।

अध्यक्ष जी, इस राशि से जितनी बड़ी मात्रा में काम हुआ है , उसके कारण बहुत लोगों को रोजी-रोटी मिली है, उसका आप अंदाजा लगा सकते हैं। हम भारत को मैनुफैक्चरिंग का , रिसर्च का, इनोवेशन का हब बनाने की दिशा में देश की युवा शक्ति को प्रोत्साहित करने का काम कर रहे हैं , व्यवस्थाएं विकसित कर रहे हैं, आर्थिक मदद की योजनाएं बना रहे हैं।

अध्यक्ष जी, एनर्जी के क्षेत्र में हम हमेशा डिपेंडेंट रहे हैं। एनर्जी के सेक्टर में हमें आत्मनिर्भर होने की दिशा में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है और हमारी कोशिश ग्रीन एनर्जी की तरफ है। हाईड्रोजन को लेकर हम बहुत बड़ी मात्रा में आगे बढ़ रहे हैं। इसमें अभूतपूर्व निवेश हो रहा है। उसी प्रकार से दूसरा क्षेत्र है, जिसमें भारत को लीड लेनी होगी और वह सेमी कंडक्टर का क्षेत्र है। पिछली सरकारों ने प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। अब हम जिस स्थिति में पहुंचे हैं , मैं विश्वास से कहता हूं कि भले ही हमारे तीन दशक खराब हो गए हैं , लेकिन आने वाला समय हमारा है। मैं सेमी कंडक्टर के क्षेत्र में अभूतपूर्व निवेश देख रहा हूं और भारत दुनिया में एक बहुत बड़ा कंट्रीब्यूशन

करेगा। इन सारे कारणों से क्वालिटी जॉब की संभावनाएं बहुत बढ़ने वाली हैं। हमने समाज में अलग स्किल मिनिस्ट्री बनाई। इसके पीछे हित यह है कि देश के नौजवानों को हुनर तथा ऐसे अवसर मिलें कि हम इंडस्ट्री 4.0 के लिए मैनपॉवर को तैयार करते हुए आगे बढ़ने की दिशा में काम कर रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहां महंगाई को लेकर काफी बातें कही गई हैं। मैं जरूर कहना चाहूंगा कि देश के सामने सच्चाई आनी चाहिए। इतिहास गवाह है कि जब भी कांग्रेस आती है महंगाई लाती है। मैं कुछ वक्तव्य आज सदन में कहना चाहता हूं। मैं किसी की आलोचना करने के लिए नहीं कह रहा हूं लेकिन हो सकता है कि हमारी बात जो समझ नहीं पाते हैं , वे अपने लोगों की बात को समझने का प्रयास करेंगे। कभी कहा गया था और किसने कहा था , वह मैं बाद में कहूंगा – 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है , आम जनता उनमें फंसी है।' यह स्टेटमेंट ऑफ फैक्ट हमारे पंडित नेहरू जी का है और लाल किले से उस समय कहा था। 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है , आम जनता उनमें फंसी है' – यह उस समय की बात है। उन्होंने लाल किले से माना था। चारों तरफ महंगाई बढ़ी थी। इस वक्तव्य के दस साल बाद के दूसरे वक्तव्य का कोट आपके सामने रखता हूं – 'आप लोग आज कल भी कुछ दिक्कतों में हैं , परेशानियों में हैं महंगाई की वजह से। कुछ तो लाचारी है , पूरे तौर से काबू की बात नहीं हो पा रही हमारे इस समय में , हालांकि वह काबू में आएगी।' दस साल बाद भी महंगाई के यही गीत कहे गए थे और यह किसने कहा था? फिर से यह नेहरू जी ने अपने कार्यकाल में ही कहा था , तब देश का पीएम रहते हुए उन्हें। 12 साल हो चुके थे। लेकिन हर बार महंगाई कंट्रोल में नहीं आ रही है , महंगाई के कारण आपको मुसीबत हो रही है, इसी के गीत गाते रहे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, अब मैं एक और भाषण का हिस्सा पढ़ रहा हूं - "जब देश आगे बढ़ता है तो कुछ हद तक कीमतें भी बढ़ती हैं। हमको यह भी देखना है कि जो भी आवश्यक वस्तु हैं , उनकी कीमत को कैसे थामें ?" यह किसने कहा था ? इसे इन्दिरा गाँधी जी ने कहा था। वर्ष 1974 में, जब उन्होंोने देश में सारे दरवाजों पर ताले लगा दिए,थेलोगों को जेल में बंद कर दिया था , उस समय 30 प्रतिशत महंगाई थी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, उनके भाषण में यहां तक कहा गया था, क्या कहा गया था, यह सुनकर आप चौंक जाएंगे, उन्होंने कहा था - 'अगर जमीन न हो, यानी कुछ पैदावार के लिए जमीन न हो तो अपने गमले और कनस्तर में सब्जी उगा लें।' ऐसी सलाहें उच्च पद पर बैठे हुए लोग दिया करते थे। हमारे देश में महंगाई को लेकर दो गाने सुपरहिट हुए थे, घर-घर गाए जाते थे। एक, 'महंगाई मार गई', और दूसरा, 'महंगाई डायन खाए जात है।' ये दोनों गाने कांग्रेस के शासनकाल में आए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यूपीए के शासनकाल में महंगाई डबल डिजिट में थी, इसको नकार नहीं सकते हैं। यूपीए की सरकार का तर्क क्या था? असंवेदनशीलता में कहा गया था कि 'महंगी आइस्क्रीम खा सकते हो तो महंगाई का रोना क्यों रो रहे हो।' जब भी कांग्रेस आई है, उसने महंगाई को ही मजबूत किया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी सरकार ने महंगाई को लगातार नियंत्रण में रखा है।... (व्यवधान) दो-दो युद्ध के बावजूद और 100 साल में आए सबसे बड़े संकट के बावजूद महंगाई नियंत्रण में है और हम यह कर पाए हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहां पर बहुत गुस्सा व्यक्त किया गया है। जितना हो सका, उतने कठोर शब्दों में गुस्सा व्यक्त किया गया है। उनका दर्द मैं समझता हूं। उनकी मुसीबत और यह गुस्सा, मैं समझता हूं, क्योंकि 'तीर निशाने पर लगा है।' भ्रष्टाचार पर एजेंसियां एक्शन ले रही हैं। उसको लेकर भी इतना गुस्सा! क्या-क्या शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है?

आदरणीय अध्यक्ष जी, दस साल पहले हमारे पार्लियामेंट में, सदन में क्या चर्चा होती थी? सदन का पूरा समय घोटालों की चर्चा पर जाता था, भ्रष्टाचार की चर्चा पर जाता था, लगातार एक्शन की डिमांड होती थी। सदन यही मांग करता रहता था कि 'एक्शन लो', 'एक्शन लो', 'एक्शन लो।' देश ने वह कालखंड देखा है। उस समय रोजाना चारों तरफ भ्रष्टाचार की खबरें थीं, और आज जब भ्रष्टाचारियों पर एक्शन लिया जा रहा है तो लोग उनके समर्थन में हंगामा करते हैं।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इनके समय में एजेंसियों का सिर्फ और सिर्फ राजनीतिक उपयोग किया जाता था, बाकी उनको कोई और काम नहीं करने दिया जाता था। अब आप देखिए कि उनके

कालखंड में क्या हुआ ? पीएमएलए एक्ट के तहत हमने पहले के मुकाबले दोगुने से अधिक केस दर्ज किए। कांग्रेस के समय में ईडी ने 5,000 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की थी। हमारे कार्यकाल में ईडी ने एक लाख करोड़ रुपये की संपत्ति दर्ज की है। देश का यह लूटा हुआ माल देना ही पड़ेगा। जिनका इतना सारा माल पकड़ा जाता हो , नोटों के ढेर पकड़े जाते हों , और अधीर बाबू तो बंगाल से आते हैं , उन्होंने तो नोटों के ढेर देखे हैं , किस-किस के घर में से पकड़े जाते हैं , किस-किस के राज्य में पकड़े जाते हैं। यह देश इन नोटों के ढेरों को देख -देख कर चौंक गया है। लेकिन अब जनता को आप मूर्ख नहीं बना सकते हैं। जनता देख रही है कि किस प्रकार से यूपीए सरकार में जो भ्रष्टचार की बातें होती थीं, उसका टोटल 10-15 लाख करोड़ रुपये का रहा है , उसकी चर्चा होती थी। हमने लाखों -करोड़ों के घोटाले तो पकड़े ही और उन सारे पैसों को गरीबों के काम में लगा दिया , गरीबों के कल्याण के लिए लगा दिया। अब बिचौलियों के लिए गरीबों को लूटना बहुत मुश्किल हो गया है। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर, जन-धन अकाउंट, आधार, मोबाइल आदि की ताकत हमने पहचानी है। तीस लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रकम हमने लोगों के खाते में सीधी पहुंचाई है। कांग्रेस के एक प्रधान मंत्री ने कहा था कि वे एक रुपया भेजते हैं और लोगों के पास 15 पैसे पहुंचते हैं, अगर उस हिसाब से मैं देखूं, तो हमने जो तीस लाख रुपये भेजे हैं , अगर उनका ज़माना होता तो कितना रुपया कहां चला जाता ? इसका हिसाब लगाइए। मुश्किल से 15 पर्सेंट लोगों के पास पहुंचता, बाकी सब कहां चला जाता?

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने दस करोड़ फर्ज़ी नाम हटाए हैं। अभी लोग पूछते हैं न कि पहले इतना आंकड़ा था, अब कम क्यों हो गया। आपने ऐसी व्यवस्था बनाई थी कि जिस बेटी का जन्म नहीं हुआ, उसको आपके यहां से विधवा पेंशन जाती थी। इस प्रकार से सरकारी योजनाओं को मारने के जो रास्ते थे, उनको बंद कर के दस करोड़ फर्ज़ी नाम हटाए हैं। यह जो परेशानी है न , वह इन चीजों की हैं, क्योंकि उनकी रोज़मर्रा की कमाई बंद हो गई है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने इन फर्ज़ी नामों को हटा कर करीब-करीब तीन लाख करोड़ रुपये फर्ज़ी हाथों में जाने से बचाए हैं , गलत हाथों में जाने से बचाए हैं। देश के टैक्सपेयर का पाई - पाई बचाना और सही काम में लगाना, इसके लिए हमने जीवन खपा रखे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, सभी राजनीतिक दलों को भी सोचने की जरूरत है और समाज में भी जो लोग बैठे हैं, उनको देखने की जरूरत है। आज देश का दुर्भाग्य है , पहले तो क्लासरूम में भी कोई अगर चोरी करता था , किसी की कॉपी करता था , तो वह भी दस दिन तक अपना मुंह किसी को दिखाता नहीं था। आज जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप सिद्ध हो चुके हैं , जो जेलों में समय काट कर के पैरोल पर आए हैं, आज वाशिंग मशीन से भी बड़ा, उनको कंधे पर बिठा कर, ऐसे चोरों का सार्वजनिक जीवन में महिमामंडन कर रहे हैं। आप देश को कहाँ ले जाना चाहते हैं ? जिनकी सजा हो चुकी है , मैं यही तो समझता हूं कि जो आरोप है , उनके लिए तो आप सोच सकते हैं , लेकिन जिनका गुनाह सिद्ध हो चुका है, जो सजा काट चुके हैं , जो सजा काट रहे हैं , ऐसे लोगों का आप महिमामंडन करते हैं।... (व्यवधान) कौन-सा कल्चर है, देश की भावी पीढ़ी को आप क्या प्रेरणा देना चाहते हो ? ऐसी कौन-सी आपकी मजबूरी है? ऐसे लोगों का महिमामंडन किया जा रहा है, उनको महान बताया जा रहा है।

माननीय अध्यक्ष जी जहां संविधान का राज है , जहां लोकतंत्र है , ऐसी बातें लंबी नहीं चल सकती हैं। ये लोग लिख कर के रखें। उनके महिमामंडन का जो काम चल रहा है, वे अपने ही खात्मौ की चिट्ठी पर सिग्नेचर कर रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी , जांच करना एजेंसियों का काम है। एजेंसियाँ स्वतंत्र होती हैं और संविधान ने उनको स्वतंत्र रखा हुआ है।... (व्यवधान) जज करने का काम न्यायाधीश का है और वे अपना काम कर रहे हैं।

अध्यक्ष जी, इस पवित्र सदन में मैं फिर से दोहराना चाहूंगा , जिसको जितना जुल्म मुझ पर करना है, कर लें, लेकिन भ्रष्टाचार के खिलाफ मेरी लड़ाई चलती रहेगी। जिसने देश को लूटा हैं , उनको लौटाना पड़ेगा। जिन्होंने देश को लूटा है , उनको लौटाना पड़ेगा। यह मैं देश के इस पवित्र सदन से वादा करता हूं। जिसको जो आरोप लगाना है , लगा लें, लेकिन देश को लूटने नहीं दिया जाएगा और जिसने लूटा है, उसे लौटाना पड़ेगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश सुरक्षा और शांति का अहसास कर रहा है। पिछले 10 वर्ष की तुलना में सुरक्षा के क्षेत्र में देश वाकई सशक्त हुआ है। आतंकवाद , नक्सलवाद अब एक छोटे दायरे में

सिमटा हुआ है। लेकिन, भारत की टेररिज्म के प्रति जो जीरो टॉलरेंस नीति है, आज पूरे विश्व को भी भारत की इस नीति की तरफ चलने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

भारत की सेनाएं सीमाओं से लेकर समुद्र तक अपने सामर्थ्य को लेकर आज भी उनकी धाक है।... (व्यवधान) हमें अपनी सेना के पराक्रम पर गर्व होना चाहिए। हम कितना ही उनकी मोरल तोड़ने की कोशिश करें, मुझे मेरी सेना पर भरोसा है। मैंने उनके सामर्थ्य को देखा है। कुछ राजनेता सेना के लिए हल्के-फुल्के शब्द बोलते हैं कि इससे हमारे देश की सेना डिमोरलाइज होगी , ऐसा कोई सपनों में भी रहता है तो वह निकल जाए। वे देश के मनोबल को खत्म नहीं कर सकते हैं। किसी के एजेंट बन कर के इस प्रकार की भाषा अगर कहीं से भी उठती है तो देश कभी स्वीकार नहीं कर सकता है। जो खुलेआम देश में अलग देश बनाने की वकालत करते हैं , जोड़ने की बातें छोड़ो, तोड़ने की कोशिश की जा रही है, आपके अंदर क्या पड़ा हुआ है ? क्या इतने टुकड़े करके भी आपके मन का समाधान नहीं हुआ है? आप देश के इतने टुकड़े कर चुके हैं, क्या और टुकड़े करना चाहते हैं, कब तक करते रहोगे?

आदरणीय अध्यक्ष जी, इसी सदन में अगर कश्मीर की बात होती थी, तो हमेशा चिंता का स्वर निकलता था, छींटाकशी होती थी, आरोप-प्रत्यारोप होते थे। आज जम्मू-कश्मीर में अभूतपूर्व विकास की चर्चा हो रही है और गर्व के साथ हो रही है।

पर्यटन लगातार बढ़ रहा है। जी -20 समिट वहां होती है। पूरा विश्व आज उसकी सराहना करता है। आर्टिकल 370 को लेकर कैसा हौवा बना के रखा था ? कश्मीर के लोगों ने जिस प्रकार से उसको गले लगाया है, कश्मीरी जनता ने जिस प्रकार से गले लगाया है , आखिर यह समस्या किसकी देन थी, किसने देश के माथे पर मढ़ा था , किसने भारत के संविधान के अंदर इस प्रकार की दरार करके रखी हुई थी?

आदरणीय अध्यक्ष जी , अगर नेहरू जी का नाम लेते हैं तो उनको बुरा लगता है। लेकिन कश्मीर को जो समस्यायें झेलनी पड़ीं , उसके मूल में उनकी यह सोच थी और उसी का परिणाम इस देश को भुगतना पड़ रहा है। जम्मू -कश्मीर के लोगों को , देश के लोगों को नेहरू जी की गलतियों की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। ... (व्यवधान) आदरणीय अध्यक्ष जी, वह भले गलतियां करके गए ,

लेकिन हम मुसीबतें झेलकर भी गलतियां सुधारने के लिए हमारी कोशिश जारी रखेंगे। हम रुकने वाले नहीं हैं। हम देश के लिए काम करने के लिए निकले हुए लोग हैं। हमारे लिए नेशन फर्स्ट है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं सभी राजनीतिक दलों के नेताओं से आग्रह करूंगा , सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करूंगा। भारत के जीवन में एक बहुत बड़ा अवसर आया है , वैश्विक परिवेश में भारत के लिए बड़ा अवसर आया है , एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का अवसर आया है। राजनीति अपनी जगह पर होती है , आरोप-प्रत्यारोप अपनी जगह पर होता है , लेकिन देश से बढ़कर कुछ नहीं होता है। इसलिए , आइए, मैं निमंत्रण देता हूं आपको , कंधे से कंधा मिलाकर हम देश के निर्माण के लिए आगे बढ़ें। राजनीति में किसी भी जगह पर रहते हुए भी राष्ट्र निर्माण में आगे बढ़ने में कोई रुकावट नहीं आती। हम इस राह को मत छोड़ें। मैं आपका साथ मांग रहा हूं , मां भारती के कल्याण के लिए साथ मांग रहा हूं , विश्व के अंदर जो अवसर आया है , उस अवसर को भुनाने के लिए आपका साथ मांग रहा हूं। मैं आपका सहयोग चाहता हूं , 140 करोड़ देशवासियों की जिंदगी को और समृद्ध बनाने के लिए, और सुखी बनाने के लिए। लेकिन , अगर आप साथ नहीं दे सकते हैं और अगर आपका हाथ ईटें फेंकने पर ही तुला हुआ है , तो आप लिखकर रखिए, आपकी हर ईंट को मैं विकसित भारत की नींव मजबूत करने के लिए लगा दूंगा। आपके हर पत्थर को , मैं विकसित भारत के जिन सपनों को लेकर हम चले हैं, उसकी नींव मजबूत करने के लिए लगा दूंगा और देश को हम उस समृद्धि की ओर लेकर जाएंगे। जितने पत्थर उछालने हैं , उछाल लीजिए, आपका हर पत्थर समृद्ध भारत के , विकसित भारत के सपने को समृद्ध बनाने के लिए हर पत्थर को मैं काम में ले लूंगा। यह भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं साथियों की तकलीफें जानता हूं। लेकिन , वे जो कुछ भी बोलते हैं , मैं दु:खी नहीं होता और दु :खी होना भी नहीं चाहिए , क्योंकि मैं जानता हूं कि ये नामदार हैं , हम कामदार हैं। हम कामदारों को तो नामदारों से सुनना ही पड़ता है। नामदार कुछ भी कहते रहें, कुछ भी कहने के उनको तो जन्मजात अधिकार मिले हुए हैं और हम कामदारों को सुनना होता है। हम सुनते भी रहेंगे और देश को सहेजते भी रहेंगे, देश को आगे बढ़ाते रहेंगे। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे इस पवित्र सदन में आदरणीय राष्ट्रपति जी के उद्बोधन को समर्थन करने के लिए बोलने का अवसर दिया। मैं आदरणीय राष्ट्रपति जी के इस उद्बोधन को समर्थन देते हुए, धन्यवाद प्रस्ताव पर आभार व्यक्त करते हुए, मेरी वाणी को विराम देता हूं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : धन्यवाद प्रस्ताव पर श्रीमती अपरूपा पोद्दार और श्री एन . के. प्रेमचन्द्रन ने अपने-अपने संशोधन प्रस्तुत किए हैं। अब मैं सभी संशोधनों को एक साथ सभा में मतदान के लिए रखता हूं।

संशोधन मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए।

माननीय अध्यक्ष : अब मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है:

" कि माननीय राष्ट्रपति जी की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए:-

"कि इस सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति जी के उस अभिभाषण के लिए, जो उन्होंने 31 जनवरी, 2024 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके हम अत्यंत आभारी हैं।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

माननीय अध्यक्ष: सदन की कार्यवाही मंगलवार , 6 फरवरी, 2024 को प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

18.52 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, February 6, 2024/Magha 17, 1945 (Saka).